



प्रिय आत्मन्, सप्रेम जय गुरुदेव! सिद्ध मार्ग ई-पत्रिका का सत्रहवाँ अंक प्रस्तुत है । इस अंक में गुरुदेव महामण्डलेश्वर स्वामी नित्यानन्द जी द्वारा मुम्बई आनन्द महोत्सव में दिये गये प्रवचन के सम्पादित अंश प्रस्तुत हैं ।

## “गुरुदेव का प्रवचन”

भोग को हम नहीं परन्तु  
भोग हमें भोगता है ।

कल सायं हमने धर्म की चर्चा श्रवण की और श्रवण के अन्त में एक प्रसंग आया था कि हमारे देश में भी लोग भोग के पीछे भाग रहे हैं । परन्तु भर्तृहरि जी कहते हैं कि भोगान्भुक्ता वयमेव भुक्ता, भोग को हम नहीं भोगते परन्तु भोग हमें भोगता है । इस बात को हम इस राष्ट्र में रहने वाले भूल गये हैं कि हमें उस भोग के पीछे दौड़ना नहीं, भागना नहीं हमें अपने जीवन में प्रयास करना है, पुरुषार्थ करना है कि मैं इस मनुष्य देह में क्यों आया हूँ ? इस भारत देश की विशेषता भ्रमण करते हुए अगर देखता हूँ तो ये ही अनुभव करता हूँ

आज इक्कीसवीं  
सदी में भी  
आधुनिकता के  
बीच में भी  
आध्यात्मिक ज्ञान  
कई महापुरुषों  
के माध्यम से  
जीवित है ।

कि हमारे यहाँ आज इक्कीसवीं सदी में भी आधुनिकता के बीच में भी आध्यात्मिक ज्ञान कई महापुरुषों के माध्यम से जीवित है । मैं बताना चाहूँगा कि इस शरीर का जन्म भी इस मुम्बई का ही है, और जो इस पारला क्षेत्र के हैं उन्हें बताना चाहूँगा कि अध्ययन भी जमनाबाई नर्सी स्कूल का ही है । ये इस लिए बता रहा हूँ क्योंकि आधुनिक लोग ये सोचते हैं कि मेरा बेटा अगर साधु बन जाये तो उसका क्या होगा ? उसका जीवन कैसे चलेगा ? मैं लोगों से पूछता हूँ कि जब आपका बेटा डॉक्टर बनेगा, वकील बनेगा तो उसकी क्या गारैन्टी है कि सारी जिन्दगी खुशी से बितायेगा । साधु कम से कम किसी महात्मा के पास जा कर उनकी सेवा करेगा, सत्संग

करेगा, मन तो भरेगा और पेट तो अवश्यमेव ही भरेगा । आज महाराज जी ने राष्ट्र का विषय रखा है तो मैं सभी से निवेदन करना चाहूँगा कि जब से प्रधानमन्त्री पद पे नरेन्द्र मोदी जी आये हैं तब से लोग बोल रहे हैं कि बहुत अच्छा होगा और हम लोग आराम से बैठ जायेंगे और वो काम करेंगे । हम सब को मिल कर काम करना पड़ेगा तब ही हमारा देश आगे जायेगा। जैसे हमने कल मलखम्भ देखा, उसमे देशपाण्डे जी ने बहुत ही अच्छी बात कही कि सब मिलकर जब पिरामिड करते हैं तब जा के ऊपर वाला पूर्णरूप से सुरक्षित है । अगर नीचे वाला थोड़ा भी हिल जाता है तो उसके कारण सारे जन हिल जाते हैं और ऊपर वाला तो निश्चितमेव ही हिल जाता है । तो हम

मेरी अपनी इच्छा यह है कि हम इतने वेदपाठी तैयार करें कि हरेक मन्दिर में, हरेक आश्रम में प्रत्येक दिन सम्पूर्ण वेद-पारायण हो ।

भारतवासी जागें, विचार करें कि हमको क्या करना है । अभी हमारे सांसद सत्यपाल जी ने कहा कि हमारा देश वेदों से बना हुआ है । तो शायद हमारे स्वामी जी महाराज के साथ १९८१ से उनके साथ विश्व भ्रमण करते करते, उन्हीं के गुरु हमारे संन्यास आचार्य रहें हैं, उन्हीं के आशीर्वाद और प्रेम से, प्रेरणा से १४ वर्ष पूर्व हमने एक वेद, संस्कृत पाठशाला प्रारम्भ की । मेरी अपनी इच्छा यह है कि हम इतने वेदपाठी तैयार करें कि हरेक मन्दिर में, हरेक आश्रम में प्रत्येक दिन सम्पूर्ण वेद-पारायण हो । हम कर रहे हैं, हम आपसे सहयोग चाहते हैं कि आप किसी भी तरह से जुड़ सकते हैं तो जुड़ जायें । हमारे यहाँ गोष्ठी होती है, बातें होती हैं, लेकिन मैंने सोचा कि

सिर्फ बातें करते रहेंगे कि कौन करेगा, कौन करेगा । एक कहावत है कि चूहे लोग आपस में मीटिंग करते हैं कि बिल्ली के गले में घण्टी कौन बाँधेगा ? कुछ हमारे यहाँ ऐसा ही है कि स्वामी जी आप शुरू करो, हम आपके साथ हैं । और फिर जब साथ का समय होता है उस समय सब गायब हो जाते हैं । तो प्रभु की, सन्तों की, गुरुओं की असीम कृपा हुई तब हमने ये विद्यालय प्रारम्भ किया । सुलभ नहीं है । जब छात्र ग्यारहवीं या बारहवीं कक्षा में आते हैं तो लोग उन्हें छोड़ते हैं कि तुम आगे जा के क्या करोगे, संस्कृत को पढ़कर तुम क्या करोगे, क्या बनोगे, इन्जीनियर बनो, डॉक्टर बनो, प्लम्बर बनो, इलेक्ट्रिशियन बनो, ये सब सीखो । हमारे यहाँ सब सीख रहे हैं

एक राजा हो जो प्रजा की देखभाल करे तथा उसकी दृष्टि हमेशा प्रजा की ओर बनी रहे ।

ताकि आप के घर कभी पूजन करने आयें उस दौरान आपके घर में बिजली में कोई समस्या है, तो वे ठीक कर देंगे । लेकिन साथ में वेद-पाठ का श्रवण अति आवश्यक है । हमारे यहाँ एक वैदिक राष्ट्रगान आता है जिससे पता चलता है कि हमारे ऋषि मुनियों ने हमारे देश के लिए क्या कल्पना की है । एक प्रार्थना तो हम प्रत्येक दिन करते हैं- स्वस्तिप्रजाभ्यः परिपालयन्ताम्, न्याय्येन मार्गेण महीं महीषाः । गो-ब्राह्मणेभ्यः शुभमस्तु नित्यं, लोकाः समस्ताः सुखिनो भवन्तु । एक ऐसा राज्य जिसमें एक राजा हो जो प्रजा की देखभाल करे तथा उसकी दृष्टि हमेशा प्रजा की ओर बनी रहे । मैं मानता हूँ कि आज के समय में जो हमारे यहाँ गोसेवा भी हम कर रहे हैं, स्वामी जी भी

यहाँ पे गोसेवा कर रहे हैं ये कहना चाहूँगा कि ये सब महाराज जी की प्रेरणा व आशीर्वाद का फल है । महाराज जी हमारे आश्रम में पहली बार आये थे तब हमारे यहाँ एक ही गाय तथा उसकी एक बछड़ी थी । महाराज जी बोले एक से क्या होगा, मुम्बई लौटे और उन्होंने तुरन्त दो गाय और एक बैल आश्रम भेज दिया । और गाय भी कैसी भेजी जो पिछले वर्ष तक लगातार दूध देती रही, जिस गाय का नाम नन्दिनी था । पिछले कुछ महीने पहले ही उसका शरीर पूरा हुआ, हमें दुख भी हुआ कि महाराज जी का एक चिह्न हमारे पास था वो चला गया । परन्तु मैंने सोचा कि कितनी उदारता एक सन्त महात्मा की कि उन्होंने देखा यहाँ इसकी आवश्यकता है और

इस भूमि पर  
ऐसी माताएँ हों  
जो शूरवीर को  
जन्म दें, कायरों  
को नहीं ।

तुरन्त उन्होंने यहाँ आकर ये नहीं कहा कि तुम ट्रक भेजो व्यवस्था करो, उन्होंने ऐसा कुछ नहीं कहा वो आये और सब व्यवस्था की और गाय भेज दी । और पूछा भी नहीं कि भेजूँ या नहीं भेजूँ । हमारे महापुरुष विद्या की रक्षा, गो की रक्षा इन सब की रक्षा करते आये हैं । जब बैल का जन्म होता है तो प्रश्न उठता है कि अब इसका करना क्या है क्योंकि अब तो ट्रैक्टर चल पड़े हैं । हम तो प्रयास करते हैं कि हम रख लें और आसपास जो किसान रह रहे हैं उन्हें दे दें । विचार करते करते चर्चा करते करते हमें पता चला है कि हमारा देश इनके कतल में आज तीसरे नम्बर पे गिना जाता है । हमारे देश के जो व्यापारी हैं उनके लिए दुःख की बात है, शर्म की बात है ।

आशा रखता हूँ कि आज जो राजनीति में लोग आये हैं, वो प्रयास करेंगे और पुरुषार्थ करेंगे कि इन सब में कुछ परिवर्तन लायें । अगर हम सिर्फ बोलेंगे, बात करेंगे, मीटिंग करेंगे तो क्या होगा ? उसके बारे में राष्ट्रगान में, वेद में कहा जाता है कि - हे ब्राह्मण ! हमारे राष्ट्र में अध्ययन एवं अध्यापन कार्य करने वाले ब्राह्मण विद्वान्, तेजयुक्त हों । ऐसे विद्वान् आप हमको दो जो ज्ञान और तेज से पूर्ण हों, उनके ज्ञान का परिचय उनके मुख से हो । और जिनके पास इस देश की रक्षा की जिम्मेदारी होती है वो भी अपने देश के प्रति समर्पित हों । और इस भूमि पर ऐसी माताएँ हों जो शूरवीर को जन्म दें, कायरों को नहीं । ऐसे पुत्रों का उनके गर्भ से जन्म हो जो अपने देश की रक्षा

आज ही संकल्प  
करें कि हम  
अपनी मातृभूमि,  
अपने धर्म, अपने  
देश के लिए,  
राष्ट्र के लिए, देव  
वाणी संस्कृत  
के लिए, हमारे  
ऋषि-मुनियों की  
धरोहर वेद के  
लिए कुछ कर के  
रहेंगे ।

पूर्णरूप से कर सके और हमेशा विजय  
प्राप्त करके ही अपने घर को वापिस  
लौटें । और कहा गया कि युवा वर्ग सभ्य  
हो । मेरा सबसे ये ही निवेदन है कि हम  
सब को मिल के कुछ करना होगा । ये हम  
किसी एक व्यक्ति के ऊपर न छोड़ें, हम  
को मिल के करना होगा । तो हम आज  
ही संकल्प करें कि हम अपनी मातृभूमि,  
अपने धर्म, अपने देश के लिए, राष्ट्र के  
लिए, देव वाणी संस्कृत के लिए, हमारे  
ऋषि-मुनियों की धरोहर वेद के लिए कुछ  
कर के रहेंगे ।

“सद्गुरु नाथ महाराज की जय”